INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 7 | AUGUST – 2026

"फसल प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन (सीधी जिले के संदर्भ में)"

बबिता जायसवाल[1] , डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह[2]
[1]शोधार्थी भूगोल, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)
[2]प्राध्यापक भूगोल, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

सारांश –

कृषि जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है तथा ग्रामीण जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण वर्ग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि गतिविधियों पर निर्भर है। किसी क्षेत्र में फसल प्रतिरूप का निर्धारण प्राकृतिक परिस्थितियों के साथ–साथ सिंचाई सुविधा, मृदा की प्रकृति, वर्षा, कृषि तकनीक, उपलब्ध पूंजी, श्रम, बाजार, कृषि उपज के मूल्य तथा कृषकों की आर्थिक स्थिति से प्रभावित होता है। इसी प्रकार कृषि उत्पादकता कृषि संसाधनों के उपयोग की दक्षता तथा प्रति इकाई भूमि से प्राप्त उत्पादन को प्रदर्शित करती है। अध्ययन में फसल चयन, एक वर्ष में ली जाने वाली फसलों की संख्या, कृषि भूमि का उपयोग, सिंचाई, कृषि निवेश, उत्पादन एवं उत्पादकता से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण अध्ययन किया गया है। अतः सीधी जिले में खाद्यान्न फसलों के साथ दलहन एवं तिलहन फसलों का भी महत्वपूर्ण स्थान है तथा कृषकों में बहुफसली कृषि की प्रवृत्ति विद्यमान है। तथापि सिंचाई, आधुनिक कृषि तकनीक, पूंजी एवं बाजार सुविधाओं की असमान उपलब्धता कृषि उत्पादकता को प्रभावित करती है। अतएव कृषि उत्पादकता एवं कृषक आय में वृद्धि हेतु सिंचाई विस्तार, उन्नत बीज, कृषि यंत्रीकरण, संस्थागत ऋण, वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों तथा प्रभावी विपणन व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाना आवश्यक है।

मुख्य शब्द : फसल प्रतिरूप, कृषि उत्पादकता, कृषि उत्पादन, फसल विविधीकरण, सिंचाई, कृषक आय, कृषि विपणन, कृषि निवेश, सीधी जिला।

प्रस्तावना –

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार कृषि होने के साथ–साथ यह रोजगार, आय, खाद्य सुरक्षा तथा विभिन्न कृषि–आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। कृषि क्षेत्र का विकास केवल खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका संबंध कृषकों की आय, ग्रामीण रोजगार, बाजार व्यवस्था, कृषि–व्यापार तथा समग्र आर्थिक विकास से भी है। भौगोलिक दृष्टिकोण से कृषि को उत्पादन की ऐसी आर्थिक गतिविधि के रूप में देखा जाता है, जिसमें भूमि, श्रम, पूंजी, तकनीक एवं प्रबंधन जैसे उत्पादन साधनों का उपयोग करके कृषि उपज प्राप्त की जाती है तथा उसका विपणन कर कृषक आय अर्जित करता है। अतः कृषि उत्पादन की मात्रा के साथ उसकी उत्पादकता, उत्पादन लागत, बाजार मूल्य तथा लाभप्रदता का अध्ययन भी आवश्यक हो जाता है।

किसी क्षेत्र में विभिन्न फसलों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र, फसलों के चयन तथा उनके वितरण को फसल प्रतिरूप कहा जाता है। फसल प्रतिरूप किसी क्षेत्र की भौगोलिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का महत्वपूर्ण संकेतक होता है। तापमान, वर्षा, मृदा, स्थलाकृति एवं जल उपलब्धता जैसे प्राकृतिक तत्व फसल चयन को प्रभावित करते हैं, जबकि सिंचाई, उन्नत बीज, उर्वरक, कृषि यंत्र, संस्थागत ऋण, बाजार मूल्य, सरकारी नीतियाँ, उत्पादन लागत तथा कृषक की जोखिम वहन क्षमता जैसे आर्थिक तत्व फसल प्रतिरूप में परिवर्तन लाते हैं। इस कारण किसी क्षेत्र का फसल प्रतिरूप स्थिर न होकर समय एवं परिस्थितियों के साथ परिवर्तित होता रहता है।

कृषि उत्पादकता का आशय सामान्यतः प्रति इकाई भूमि से प्राप्त उत्पादन से है। कृषि उत्पादकता को कृषि क्षेत्र की कार्यकुशलता का महत्वपूर्ण मापदंड माना जाता है। यदि समान क्षेत्रफल में आधुनिक तकनीक, बेहतर सिंचाई एवं गुणवत्तापूर्ण कृषि निवेश के माध्यम से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जाता है, तो उत्पादकता में वृद्धि मानी जाती है। उत्पादकता में वृद्धि से न केवल कृषि उत्पादन बढ़ता है, बल्कि कृषक की प्रति इकाई भूमि से प्राप्त आय में भी वृद्धि की संभावना रहती है। हालांकि उत्पादकता में वृद्धि का वास्तविक आर्थिक लाभ तभी सुनिश्चित हो सकता है जब कृषि उपज के लिए उचित बाजार मूल्य, कम विपणन लागत, भंडारण सुविधा तथा प्रभावी विपणन व्यवस्था उपलब्ध हो।

सीधी जिला मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण कृषि प्रधान क्षेत्र है। जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रमुख भूमिका है। यहां कृषि गतिविधियाँ प्राकृतिक परिस्थितियों, वर्षा की मात्रा, मृदा की प्रकृति, सिंचाई सुविधा तथा कृषकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती हैं। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि संसाधनों की उपलब्धता समान नहीं होने के कारण फसल प्रतिरूप तथा कृषि उत्पादकता में क्षेत्रीय अंतर देखने को मिलता है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में कृषकों की कृषि गतिविधियाँ मुख्यतः मानसून की अनिश्चितता पर निर्भर रहती हैं, जबकि सिंचित क्षेत्रों में रबी एवं अन्य फसलों के उत्पादन की संभावनाएँ अपेक्षाकृत अधिक रहती हैं।

सीधी जिले में खरीफ मौसम के दौरान वर्षा पर आधारित फसलों का महत्व अधिक दिखाई देता है। धान, मक्का, अरहर, उड़द, सोयाबीन आदि फसलों का चयन स्थानीय प्राकृतिक परिस्थितियों एवं कृषकों की आवश्यकताओं के आधार पर किया जाता है। रबी मौसम में गेहूँ, चना, मसूर एवं अन्य फसलों का उत्पादन सिंचाई सुविधा तथा मृदा की अनुकूलता के अनुसार किया जाता है। इस प्रकार जिले में खाद्यान्न के साथ दलहन एवं तिलहन फसलों का भी कृषि अर्थव्यवस्था में योगदान है। फसल विविधीकरण कृषकों को उत्पादन जोखिम कम करने तथा आय के विभिन्न स्रोत विकसित करने में सहायता प्रदान कर सकता है।

फसल प्रतिरूप पर बाजार व्यवस्था का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। कृषक केवल अपनी खाद्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर फसल का चयन नहीं करता, बल्कि उत्पादन लागत, अपेक्षित बाजार मूल्य, उपज की मांग, सरकारी समर्थन मूल्य, परिवहन सुविधा तथा स्थानीय व्यापारिक व्यवस्था को भी ध्यान में रखता है। कृषि के विस्तार के साथ कृषकों के लिए कृषि उपज का लाभकारी विपणन महत्वपूर्ण हो गया है। यदि किसी फसल का उत्पादन अधिक है, लेकिन उसका उचित मूल्य प्राप्त नहीं होता, तो उत्पादन में वृद्धि के बावजूद कृषक की वास्तविक आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हो सकता। इसलिए फसल प्रतिरूप के अध्ययन में उत्पादन के साथ विपणन एवं आर्थिक प्रतिफल को भी सम्मिलित करना आवश्यक है।

कृषि उत्पादकता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में सिंचाई का विशेष महत्व है। पर्याप्त एवं सुनिश्चित सिंचाई सुविधा कृषकों को एक वर्ष में एक से अधिक फसल लेने की क्षमता प्रदान करती है। इससे कृषि भूमि का उपयोग अधिक गहन रूप से किया जा सकता है तथा कृषक की आय के अवसर बढ़ते हैं। इसके विपरीत वर्षा पर निर्भर कृषि में मानसून की अनिश्चितता के कारण उत्पादन जोखिम बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में सूखा, अल्पवर्षा अथवा वर्षा के असमान वितरण का सीधा प्रभाव कृषि उत्पादन एवं कृषक आय पर पड़ सकता है।

आधुनिक कृषि तकनीक भी उत्पादकता वृद्धि का महत्वपूर्ण आधार है। उन्नत बीज, संतुलित उर्वरक प्रयोग, कीट एवं रोग नियंत्रण, कृषि यंत्रीकरण, वैज्ञानिक फसल प्रबंधन तथा कृषि संबंधी तकनीकी जानकारी के प्रभावी उपयोग से प्रति इकाई उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। किंतु छोटे एवं सीमांत कृषकों के लिए आधुनिक कृषि निवेश हेतु पर्याप्त पूंजी की उपलब्धता एक महत्वपूर्ण समस्या हो सकती है। संस्थागत ऋण, कृषि बीमा, सरकारी सहायता एवं तकनीकी विस्तार सेवाएँ इस समस्या को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

कृषि उत्पादकता का संबंध उत्पादन लागत एवं लाभप्रदता से भी है। यदि कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ बीज, उर्वरक, मजदूरी, सिंचाई, डीजल, मशीनरी तथा अन्य निवेशों की लागत में अत्यधिक वृद्धि होती है, तो उत्पादन बढ़ने के बावजूद कृषक का शुद्ध लाभ सीमित रह सकता है। अतः कृषि विकास की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन केवल उत्पादन के आधार पर नहीं किया जा सकता। उत्पादन, उत्पादकता, लागत, बाजार मूल्य, विपणन व्यय तथा कृषक की शुद्ध आय को समग्र रूप से देखना आवश्यक है।

सीधी जिले में फसल प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता का अध्ययन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इससे जिले की कृषि अर्थव्यवस्था की वास्तविक संरचना, फसल विविधीकरण की स्थिति, कृषि संसाधनों के उपयोग तथा कृषकों की आर्थिक संभावनाओं को समझने में सहायता मिलती है। एक वर्ष में कृषकों द्वारा ली जाने वाली फसलों की संख्या भी कृषि भूमि के उपयोग की तीव्रता का महत्वपूर्ण संकेतक है। बहुफसली कृषि के माध्यम से कृषक एक ही कृषि वर्ष में विभिन्न फसलों से आय प्राप्त कर सकता है तथा किसी एक फसल में उत्पादन अथवा मूल्य संबंधी जोखिम होने पर आर्थिक क्षति को सीमित कर सकता है।

कृषि विपणन, भंडारण, परिवहन तथा प्रसंस्करण सुविधाओं का विस्तार भी कृषि उत्पादकता के आर्थिक प्रभाव को बढ़ाने में सहायक है। स्थानीय स्तर पर कृषि उपज का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन होने से कृषकों को कच्ची उपज बेचने के स्थान पर अपेक्षाकृत अधिक आर्थिक प्रतिफल प्राप्त हो सकता है। इसी प्रकार कृषक उत्पादक संगठन, सहकारी समितियाँ एवं सामूहिक विपणन व्यवस्था कृषकों की सौदेबाजी क्षमता को मजबूत कर सकती हैं।

अतः प्रस्तुत शोध–पत्र में सीधी जिले के संदर्भ में फसल प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता का अध्ययन भौगोलिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह समझना है कि विभिन्न प्राकृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ फसल चयन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं तथा कृषि उत्पादकता में परिवर्तन कृषकों की आय एवं कृषि की लाभप्रदता से किस प्रकार संबंधित है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन सीधी जिले की कृषि अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति को समझने तथा कृषि विकास की संभावनाओं को रेखांकित करने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

शोध का उद्देश्य –

किसी भी क्षेत्र में कृषि की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन केवल कृषि भूमि के विस्तार अथवा कुल उत्पादन के आधार पर नहीं किया जा सकता, बल्कि विभिन्न फसलों के क्षेत्रीय वितरण, फसल चयन, प्रति इकाई उत्पादन, कृषि संसाधनों की उपलब्धता तथा कृषकों को प्राप्त आर्थिक प्रतिफल के आधार पर किया जाना आवश्यक है। सीधी जिले में कृषि प्राकृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित है। अतः फसल प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता का अध्ययन जिले की कृषि अर्थव्यवस्था तथा कृषकों की आर्थिक स्थिति को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है –

- सीधी जिले में प्रमुख फसलों के फसल प्रतिरूप एवं उनके क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन करना।
- विभिन्न फसलों की कृषि उत्पादकता का विश्लेषण करते हुए उत्पादकता को प्रभावित करने वाले प्रमुख आर्थिक एवं भौगोलिक कारकों का अध्ययन करना।
- फसल प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता के कृषक आय, उत्पादन लागत एवं कृषि की आर्थिक लाभप्रदता से संबंध का विश्लेषण करना।

शोध विधि –

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के समंकों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक समंकों का संकलन सीधी जिले के चयनित कृषक उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष संपर्क, साक्षात्कार एवं संरचित अनुसूची के माध्यम से किया गया है। अध्ययन में कुल 400 कृषक उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है। प्राथमिक सर्वेक्षण के माध्यम से कृषकों की कृषि भूमि, एक वर्ष में ली जाने वाली फसलों की संख्या, प्रमुख फसलें, सिंचाई सुविधा, उन्नत बीज एवं उर्वरकों का उपयोग, कृषि यंत्रीकरण, कृषि निवेश, उत्पादन, उत्पादकता, कृषि उपज के विक्रय तथा कृषक आय से संबंधित जानकारी संकलित की गई।

प्राप्त प्राथमिक समंकों को वर्गीकृत, सारणीबद्ध एवं प्रतिशतात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। द्वितीयक समंकों का संकलन कृषि विभाग, जिला सांख्यिकी कार्यालय, मध्यप्रदेश शासन के संबंधित विभागों, कृषि सांख्यिकी, आर्थिक सर्वेक्षण, जनगणना प्रकाशनों तथा कृषि से संबंधित शासकीय प्रतिवेदनों से किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। विभिन्न तथ्यों की तुलना तथा व्याख्या के लिए प्रतिशतात्मक विश्लेषण को आधार बनाया गया है। इस प्रकार प्राथमिक सर्वेक्षण से प्राप्त कृषक–स्तरीय तथ्यों तथा द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त क्षेत्रीय कृषि संबंधी समंकों को समन्वित करते हुए सीधी जिले में फसल प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता की स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषण –

सीधी जिले में कृषि भूमि का उपयोग एवं फसल प्रतिरूप प्राकृतिक तथा आर्थिक दोनों प्रकार की परिस्थितियों से प्रभावित होता है। जिले में वर्षा का वितरण, मृदा की प्रकृति, सिंचाई सुविधा तथा स्थलाकृतिक दशाएँ विभिन्न फसलों के चयन को प्रभावित करती हैं। खरीफ मौसम में मानसूनी वर्षा की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है, जबकि रबी मौसम की फसलें अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में सिंचाई सुविधा पर निर्भर रहती हैं। जिन क्षेत्रों में पर्याप्त जल उपलब्धता है, वहाँ कृषकों द्वारा एक कृषि वर्ष में एक से अधिक फसलें लेने की संभावना अधिक रहती है। इसके विपरीत वर्षा आधारित क्षेत्रों में कृषि जोखिम अधिक होने के कारण एकल फसल प्रणाली की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है।

कृषकों द्वारा फसल चयन केवल प्राकृतिक परिस्थितियों के आधार पर नहीं किया जाता, बल्कि उत्पादन लागत एवं बाजार में प्राप्त होने वाले संभावित मूल्य का भी इस पर प्रभाव पड़ता है। खाद्यान्न फसलें कृषकों की घरेलू खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ बाजार में बिक्री का अवसर प्रदान करती हैं। वहीं दलहन एवं तिलहन फसलें फसल विविधीकरण में योगदान करती हैं तथा कृषि जोखिम को कम करने में सहायक हो सकती हैं। इस प्रकार फसल प्रतिरूप कृषक की खाद्य सुरक्षा, आय की आवश्यकता तथा बाजार की मांग के बीच संतुलन को भी प्रदर्शित करता है।

कृषि उत्पादकता में वृद्धि के लिए सिंचाई सुविधा का विस्तार महत्वपूर्ण है। पर्याप्त सिंचाई उपलब्ध होने पर कृषक फसल की समय पर बुवाई, आवश्यकतानुसार सिंचाई तथा बेहतर फसल प्रबंधन कर सकता है। इससे उत्पादन में स्थिरता आने के साथ प्रति इकाई भूमि उत्पादकता बढ़ने की संभावना रहती है। इसके विपरीत वर्षा आधारित कृषि में वर्षा की अनिश्चितता के कारण उत्पादन में उतार–चढ़ाव बना रहता है। अतः सीधी जिले में कृषि उत्पादकता के क्षेत्रीय अंतर को समझने के लिए सिंचाई उपलब्धता का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

आधुनिक कृषि तकनीक भी उत्पादकता को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है। उन्नत बीज, संतुलित उर्वरक, कीटनाशक, कृषि यंत्र तथा वैज्ञानिक कृषि प्रबंधन का उपयोग फसल उत्पादन में वृद्धि कर सकता है। किंतु आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए कृषकों के पास पर्याप्त पूंजी एवं तकनीकी जानकारी होना आवश्यक है। छोटे एवं सीमांत कृषकों के लिए कृषि निवेश की लागत तथा संस्थागत ऋण की उपलब्धता कृषि तकनीक अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कृषि ऋण की सरल एवं समयबद्ध उपलब्धता कृषकों को गुणवत्तापूर्ण बीज, उर्वरक एवं कृषि उपकरणों में निवेश करने में सहायता प्रदान कर सकती है।

प्राथमिक सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों के आधार पर एक वर्ष में ली जाने वाली फसलों की संख्या जिले में कृषि भूमि के उपयोग की तीव्रता को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। दो अथवा दो से अधिक फसलें लेने वाले कृषकों की पर्याप्त संख्या यह संकेत करती है कि जिले के अनेक कृषक उपलब्ध कृषि भूमि एवं संसाधनों का अपेक्षाकृत गहन उपयोग कर रहे हैं। बहुफसली कृषि से कृषकों को विभिन्न समयावधियों में आय प्राप्त करने के अवसर मिलते हैं तथा किसी एक फसल के उत्पादन अथवा मूल्य में कमी होने पर आर्थिक जोखिम को सीमित किया जा सकता है।

कृषि उत्पादकता एवं कृषक आय के मध्य संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। अधिक उत्पादन तभी आर्थिक रूप से लाभकारी माना जाएगा जब उत्पादन लागत की तुलना में कृषक को पर्याप्त बाजार मूल्य प्राप्त हो। परिवहन, भंडारण, मंडी व्यवस्था तथा बिचौलियों से संबंधित लागत भी कृषक की वास्तविक आय को प्रभावित करती है। इसलिए कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ प्रभावी कृषि विपणन व्यवस्था का विकास भी आवश्यक है। कृषक

उत्पादक संगठन, सहकारी समितियाँ एवं सामूहिक विपणन व्यवस्था कृषकों की बाजार संबंधी जानकारी एवं सौदेबाजी क्षमता को बढ़ा सकती हैं।

फसल विविधीकरण कृषि अर्थव्यवस्था को अधिक स्थायित्व प्रदान कर सकता है। यदि कृषक केवल एक फसल पर निर्भर रहता है, तो मौसम, रोग, कीट अथवा बाजार मूल्य में प्रतिकूल परिवर्तन होने पर उसकी आय प्रभावित हो सकती है। विभिन्न फसलों का संतुलित संयोजन उत्पादन जोखिम को कम करने के साथ कृषि आय के अवसरों को विस्तृत करता है। इसके अतिरिक्त कृषि उपज के प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से कृषकों को उत्पादन के अतिरिक्त आर्थिक लाभ प्राप्त करने की संभावना रहती है।

सीधी जिले में कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए सिंचाई विस्तार, उन्नत बीज, कृषि यंत्रीकरण, तकनीकी प्रशिक्षण, संस्थागत ऋण एवं कृषि बीमा को एकीकृत रूप से विकसित करना आवश्यक है। साथ ही कृषि विपणन, भंडारण एवं परिवहन की सुविधाओं में सुधार किया जाना चाहिए। इस प्रकार कृषि विकास को केवल उत्पादन वृद्धि तक सीमित न रखते हुए उत्पादन लागत, उत्पादकता, बाजार मूल्य, आय तथा लाभप्रदता के समग्र संदर्भ में देखना अधिक उपयोगी होगा। अतः प्राथमिक सर्वेक्षण द्वारा कृषक उत्तरदाताओं से संकलित समंकों के आधार पर सीधी जिले में कृषकों द्वारा एक वर्ष में ली जाने वाली फसलों का विवरण सारणी क्रमांक 01 में प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक–1

सीधी जिले में कृषक उत्तरदाताओं द्वारा एक वर्ष में ली जाने वाली फसलों की संख्या का विवरण

क्र.	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	एक फसल	87	21.75
2.	दो फसलें	163	40.75
3.	तीन फसलें	104	26.00
4.	तीन से अधिक फसलें	46	11.50
कुल योग		400	100.00

स्रोतः प्राथमिक सर्वेक्षण द्वारा संकलित समंक, 2025–26।

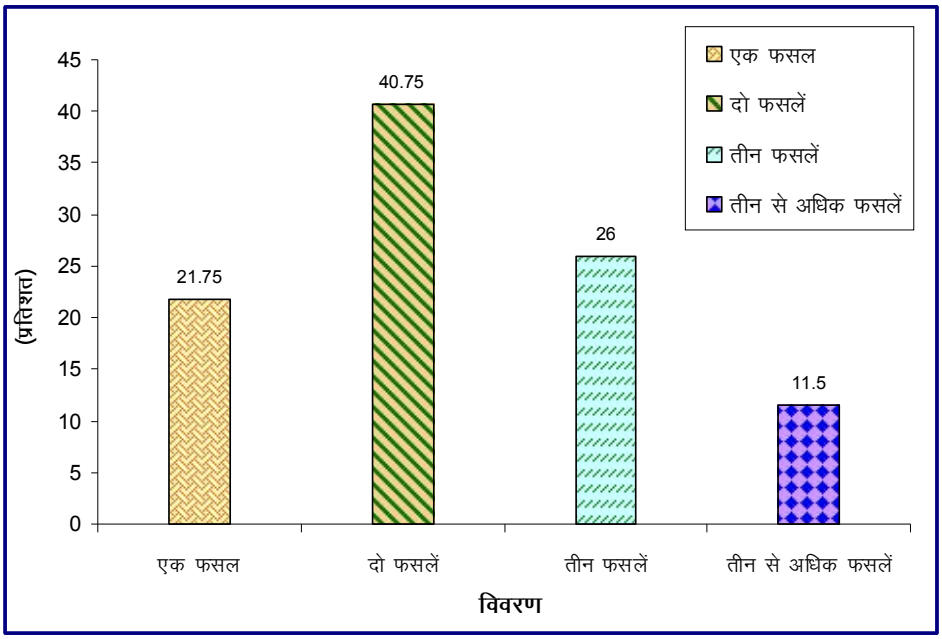

आरेख क्र. 1 : सीधी जिले में कृषक उत्तरदाताओं द्वारा एक वर्ष में ली जाने वाली फसलों का विवरण

उपरोक्त सारणी एवं आरेख से स्पष्ट होता है कि सीधी जिले में कृषकों के मध्य बहुफसली कृषि की प्रवृत्ति विद्यमान है। कुल 400 उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 40.75 प्रतिशत कृषक एक वर्ष में दो फसलें लेते हैं। इसके पश्चात् 26.00 प्रतिशत कृषक तीन फसलें लेने वाले हैं। वहीं 21.75 प्रतिशत कृषक एक वर्ष में केवल एक फसल लेते हैं, जबकि 11.50 प्रतिशत कृषक तीन से अधिक फसलें लेते हैं। इस प्रकार अधिकांश कृषक एक वर्ष में दो अथवा दो से अधिक फसलें लेकर कृषि भूमि का अपेक्षाकृत गहन उपयोग कर रहे हैं। यह स्थिति जिले में फसल विविधीकरण तथा बहुफसली कृषि की संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। साथ ही, एक फसल लेने वाले कृषकों का अनुपात यह संकेत करता है कि कुछ क्षेत्रों में सिंचाई सुविधा, जल उपलब्धता, कृषि निवेश एवं प्राकृतिक परिस्थितियाँ बहुफसली कृषि के विस्तार को प्रभावित कर रही हैं।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्षतः स्पष्ट होता है कि सीधी जिले की कृषि अर्थव्यवस्था में फसल प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता का महत्वपूर्ण स्थान है। जिले में बहुफसली कृषि एवं कृषि भूमि के गहन उपयोग की प्रवृत्ति दिखाई देती है। कृषि उत्पादकता पर सिंचाई सुविधा, उन्नत बीज, कृषि निवेश, आधुनिक तकनीक एवं कृषकों के तकनीकी ज्ञान का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतः कृषि उत्पादकता एवं कृषक आय में वृद्धि के लिए सिंचाई विस्तार, कृषि यंत्रीकरण, संस्थागत ऋण, फसल विविधीकरण तथा वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। साथ ही कृषि उपज के उचित मूल्य, भंडारण, परिवहन, विपणन एवं प्रसंस्करण सुविधाओं के विकास से कृषि की लाभप्रदता बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार संतुलित फसल प्रतिरूप, उत्पादकता वृद्धि एवं प्रभावी कृषि विपणन व्यवस्था सीधी जिले के कृषकों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने तथा ग्रामीण आर्थिक विकास को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ –

1. मध्यप्रदेश शासन, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, कृषि सांख्यिकी एवं कृषि संबंधी प्रतिवेदन, भोपाल, 2023।
2. मध्यप्रदेश शासन, वित्त विभाग, मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24, भोपाल, 2024।
3. भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, Agricultural Statistics at a Glance 2023, नई दिल्ली, 2023–24।
4. भारत सरकार, नीति आयोग, Strategy for New India @75: Agriculture, नई दिल्ली, 2023।
5. जिला प्रशासन, सीधी, जिला सांख्यिकी एवं विकास संबंधी प्रतिवेदन, सीधी, 2024।
6. भारत सरकार, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, Statistical Year Book of India,, नई दिल्ली, 2024।